International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 01, January - March, 2021, pp.273-275

भारतीय नारी–कल, आज और कल

मीना रानी*

प्रस्तावना

नारी, नारी, नारी यह शब्द कहने के लिए भले ही छोटा हो लेकिन इस शब्द और इस शब्द उच्चारण में पूरी सृष्टि ही कम पड़ जाए। यह ध्वनी आप में ही ऊर्जावान है। नारी को अनेक रूपों से शोभित किया जाता है। माँ, जननी, पत्नी, स्त्री, भामिनी, कान्ता, बेटी, बहु आदि। लेकिन नारी पूर्ण रूप से मातृत्व के लिए जानी जाती है। इस ब्रह्मांड को संचालित वैसे तो विधाता ही करता है लेकिन इसकी प्रतिनिधि एक नारी है फिर चाहे उसका रूप कोई भी हो। हर दुख में जो मुख आवरण से ध्वनी निकलती है वह एक ही है माँ । लेकिन फिर भी उसकी स्थिति आज भी दयनीय बनी हुई। पुराणों में शास्त्रों में जो स्थान नारी का था आज आधुनिक युग में वह बदल गया है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।''कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है उस घर में देवता वास करते हैं। लेकिन ऐसी बातें पुराणों तक ही सीमित रह गई है। उत्तर आधुनिक युग या कहें बीसवीं शताब्दी में नारी जाति पराधीनता और अत्याचारों में बंध कर रह गई है। भारतीय समाज और सभ्यता का इतिहास स्त्री जाति की विवशता और बर्बरता से भरा हुआ है। एक समाज वेता के लिए यह विषय अत्यन्त दयनीय है। भारतीय समाज पुरुष प्रधान है। एक नारी हर रूप में पुरुष पर निर्भर, समझती जाती है। कभी पिता, पति और बेटा, भाई के रूप में इसी कारण भी उसकी स्थिति दयनीय है। नारी अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं कर सकती यही समाज की बिडम्बना है।

लेकिन एक नारी इस स्थिति के लिए स्वयं भी जिम्मेवार है। अपनी ग्रहस्थी और अस्तित्व में नारी हमेशा कर्तव्य को प्राथमिकता देती चली आई है। यही सोच नारी के पतन का कारण बनी हुई है। समय बदल चूका है आज कर्तव्य भी स्पष्ट है और पथ भी ।

आज की नारी का कर्तव्य और राह दोनों बदल चुकी है। नारी में क्रांतिकारी परिवर्तन और वर्तमान निर्माण की भावना निहित है। एक नारी से जुड़ी सारी परिस्थितियों दशा, कानून, नियम, शिक्षा, रोजगार सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के विमर्श का चलन अब जोरों पर है। आधुनिक नारी अब चूल्हा–चोका छोड़कर व्यवसाय, नौकरी की राह पर चल पड़ी है। पुरुषों की मानसिकता रही है कि नारी को आगे बढ़ने ना दे यही सोच शक की नजरों में बदल जाती है। नारी हर स्थिति में लड़ती ही रहती हैं फिर चाहे घर हो या बाहर क्योकि दोनों जगहों पर तुच्छ मानसिक प्रवृति आसीन है।

भारतीय संस्कृति में नारी को पैरों की जूती ही समझा गया है उसको सिर पर कैसे बैठने देगें ये धर्म अधिकारी क्योंकि वो भी पुरुष ही है। नारी से हार मानना इनकी संस्कृति में नही है ऐसी सोच वाले धर्मों के देवता बन जाते हैं। एक पढ़ी लिखी सोच वाली स्त्री अगर इनसे ऊपर उठकर अपना अस्तित्व बना लेती है तो बदचलन, आवारा समझी जाती है। ''पुरुष की नारी के प्रति मानसिकता है कि नारी मरखनी गाय बराबर है गाय रस्सा तुडाकर भागती है कोई पकड़ता है तो सींगो से वार करती है यह नारी भी सीखचे तोड़ डालेगी।''[1]

---

[6] शोध छात्रा (हिंदी), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश।

''पुरुष में साहस, बल, उग्रता क्रोध होता लेकिन नारी में मातृत्व, दया, धैर्य, कोमलता आदि गुण होते है''[2] लेकिन दोनों एक रथ के दो पहिये ही है यदि दोनों अपने कर्तव्य को समझे तो अधिकार का प्रश्न ही कहा उठता है। पुरुषों में नारी को दबाना चाहा दबा दिया, अब प्रतिक्रिया शुरु हो ही जाएगी। इस पुरुष प्रधान समाज में खुद के लिए नारी पर अत्याचार गलत है । लेकिन इस अन्याय को सहन करने वाली हर वो नारी जो आधुनिकता की आड़ में गलत प्रवृति का शिकार होती जा रही ह। वो भी तो गलत है। आधुनिकता हमें विचारों से खोलती है ना ही कपड़ों से, यह बात एक नारी को भी समझनी चाहिए। ''अब तक नारी के बारे मे जो भी कुछ कहा लिखा उसे शक की निगाहों से देखना चाहिए क्योंकि लिखने वाला न्यायधीश और अपराधी दोनो ही है।''[3] क्योंकि भारतीय नारी की नग्न अवस्था उस समय उजागर होती है कि जबवह अपनी रोजी रोटी के लिए मॉल, विज्ञापनों से जुड़ जाती है। नारी को मॉल में सेल्स गर्ल के नाम पर अर्धनग्न अवस्था में किसी नारी द्वारा गरमागरम स्वागत किया जाता है। ऑफिसों में प्रवेश द्वार पर भी ऐसी बिडम्बना देखी जा सकती है। यह स्थिति ही समाज के बहुत बडे तबके की मानसिकता का परिचायक है पुरुष की सोच और दृष्टि के बिना नारी की मुक्ति बेमानी उजागर करती है। अपनी इच्छा से जीना राह चुना कोई गलत कार्य नहीं, लेकिन इच्छा के कारण राह गलत ना हो जाए। यह ध्यान हर उस नारी को रखना है जो आधुनिकता बोध को प्राथमिकता देती है। जीवन की राह हर मानव के लिए कठिन है नारी तो बस मानसिकता की शिकार है। बीसवीं सदी के भारतीय आन्दोलनों में अपनी जगह बनाकर नारी ने नारी चेतना को आगे बढ़ाया है। तथापि स्त्री राजनीति के रूप में व्यसाय में स्वायत पहचान इस समय सम्भव हुई है। अपनी जिम्मेवारी को निभा कर नौकरी करना ये सिर्फ नारी में ही हो सकता है। घर के सदस्यों को उनकी जरूरतों को खूब अच्छी तरह समझना एक नारी के ही बस में होता है। बिना नारी के एक दिन पुरुष गृह कार्य को निभाने की सोच भी नहीं सकता उसी कार्य को करके नौकरी करने की कला और हिम्मत एक ढृढ़ संकल्प नारी ही कर सकती है। बच्चों के पालन–पोषण से लेकर वृद्धों की सेवा तक का भार एक नारी के कंधों पर ही जड़ा जा सकता है। जब हर स्थिति में नारी ही बेहतर है तो पुरुषों को अभिमान किस बात का रहता है। यह प्रश्न हर नारी के भीतर जहर की तरह खोलता है, सहन करना नारी की भी मानसिकता बन चुकी है।

आधुनिकता विचारों से होती है ना की कपड़ों से जिस दिन ये बात पुरुष और नारी को समझ आ जाएगी भारतीय नारी का जीवन भी सही मान्य मे सुधर जाएगा। अन्यथा इतिहास गवाह है नारी का अपमान करने वाला जब महाभारत रामायण में नहीं बचा तो आज तो कलयुग हैं, इस युग में सब व्यर्थ है। नारी तो नारी है उसका जीवन उसकी इज्जत है। ये बात प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों रूपों मे सिद्ध हो चुकी है। कुछ इतिहासकार नारी शब्द को नारीवाद से जोड़कर उसे आन्दोलनों के लिए तत्पर करते है। प्राचीन नारीवाद में आन्दोलन, नारी संघर्ष अस्मिता के लिए था लेकिन वर्ग समुदाय ने इस वाद को नारीवाद से हटा कर राजनीति की और बदल दिया । हर तरह से मर्दवादी मानसिकता नारी को शोषित करती आई है।

''जब हम औरत की स्वतन्त्रता जो कल क्या थी? आज क्या है इसके बारे मे विचार करते हैं तो हमारी सीधा मतलब यह होता है कि नारी को मूल्य बोध से मुक्त कर देना चाहिए।''[4] इस पुरुष प्रधान समाज में नारी को भी समाज दर्जा देना चाहिए। आज एक पढ़ी लिखी जागरूक नारी जिसे दैहिक स्वतंत्रता समझ रही है उसमें वह शोषण की गंध को महसूस ही नहीं कर पा रही है। सवर्ण तबको के कुछ मर्दवादी अपने हेय या कहे की तुच्छ दृष्टि नारी पर बनाए रखते है। उनको ये एहसास है कि वो भी नारी के बिना पूर्ण नही,फिर भी अन्य नारी के साथ अपना ऐसा व्यवहार बनाए रखते है। नारी जो पुराणों से पूजनीय है उनको देह व्यापार में लगा दिया जाता है। इस प्रवृति के शोषित लोग संस्कृति को ताक पर रखते है और अपना वर्चस्व सत्ता के रूप में बनाए रखते है। कुछ तो ऐसे संस्कृति के ठेकेदार बन जाते है कि एक नारी को सिवाय तिरस्कार के कुछ नहीं दे सकते। परन्तु इन सब को सहन करते हुए नारी तो पानी के बहाव की तरह ही बहती रहती है, अपनी राह पहुँचने तक रुकती नहीं। एक नारी अगर शीतल जल है तो , वह अग्नि भी है सरस्वती है तो , दुर्गा भी है मॉ काली है तो संतोषी भी ये सभी रुप एक नारी के ही है बदलते समय के साथ नारी भी बदलती जा रही है।

नारी मात्र सौंदर्य और प्रेम की मूर्ति नहीं रही है आज उसका दबदबा इतना बढ़ गया है कि पुरुष उसके बढते हुए अस्तित्व को देखकर रसोई में केवल हाथ नहीं बांटता है अपना दायित्व भी निभाता है नारी की बढ़ती हुई उच्छृखलता ने जीवन जीने की कला ने मनुष्य और पाश्विक प्रवृति को बदल दिया है। जब नारी ने पशु प्रवृति को अपनाने में कोई संकोच नहीं किया तो संघर्ष में संकोच क्यो करेगी। नारी समाज का दर्पण होती है जैसी नारी होगी वैसा समाज कहलाएगा। आजादी हमारी शर्मिंदगी का कारण ना बन जाये, मर्यादाओं की सीमा तय करने का दायित्व स्वयं नारी का ही होना चाहिए। प्राच्य एवं पाश्चात्य के बीच हम स्वतंत्रता के नाम पर स्वछन्दता से परिपूर्ण न हो जाये क्योंकि स्वछंदता मानव का सत्यानाश करती है।

lUnHk xzUFk lwph

~ अवंतिका देवी, विश्व की आधुनिक प्रगतिशील नारी, पृष्ठ–75

~ कमल, उत्तर आधुनिक हिंदी कहानी का नारी सन्दर्भ, पृष्ठ–18

~ कविता, लौटते हुए, पृष्ठ–71

~ श्रुति सुधा उत्तर आधुनिक स्त्री विमर्श, पृष्ठ–82.

❖◆❖